व्यर्थ ही व्यर्थ, सब कुछ व्यर्थ है।

Dr. Johnson Cherian

All is Vain_Hindi.indd 1 31/08/2024 4:10:04 PM

यदि मनुष्य बहुत वर्ष जीवित रहे, तो उन सभों में आनन्दित रहे; परन्तु यह स्मरण रखे कि अन्धियारे से दिन भी बहुत होंगे। जो कुछ होता है वह व्यर्थ है॥ अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख....

(सभोपदेशक 11:8,12:1)

उपदेशक का यह वचन है, कि व्यर्थ ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है। उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है? (सभोपदेशक 1:2, 3)

हमारी पीढ़ी में रहने वाले अधिकांश लोग अपने जीवन के किसी न किसी मोड़ पर यह महसूस करते हैं जो राजा सुलैमान यहाँ कहते हैं। वह इसराइल के सबसे अमीर राजाओं में से एक था और सबसे बुद्धिमान था फिर भी उसे लगता था कि सब कुछ व्यर्थ है।

शायद आपने भी पहले ऐसा महसूस किया हो या अब महसूस कर रहे हो। क्या इस जीवन का कोई अर्थ है? यह एक ऐसा प्रश्न है जो बहुत से लोग पूछते हैं। बीमारियाँ और परेशानियाँ उस आनंद और शांति से कहीं अधिक हैं जो व्यक्ति चाहता है। गरीब अमीरों को देखकर कहते हैं कि उन्हें कोई समस्या नहीं है, लेकिन केवल अमीर ही उनकी परेशानियों को जानते हैं। हमारे समय में युद्ध, अकाल, बाढ़, भूकंप, महामारी, आतंकवाद, शोषण और अन्य सभी अपराध पहले से ही अपने चरम पर हैं। ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो संतुष्ट जीवन जीते हैं। क्या आप अपनी जिंदगी जिस तरह से चल रही है उससे संतुष्ट हैं?

मैं ने उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते हैं; देखो वे सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है। (सभोपदेशक 1:14)

इस बारे में सोचें, मानव जाति ने विभिन्न क्षेत्रों- कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी और यात्रा में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है, फिर भी कमज़ोर राष्ट्रों के निर्माण और पुनर्स्थापना के बजाय, उन्हें हड़पने और मिटा देने की सनक है। अधिकांश मज़बूत देशों के पास सामूहिक विनाश के हथियार हैं और वे ढेर कर रहे हैं, फिर भी वे वैश्विक शांति की बात करते रहते हैं। वैश्विक जीवन प्रत्याशा लगभग 70 वर्ष है और हम जो अनुभव करते हैं उससे हम जीवन में चीजें सीखते हैं। आज तक, आपकी उम्र चाहे जो भी हो, आपने पृथ्वी पर जीवन के बारे में क्या समझा है? आप उन वर्षों के बारे में कैसा महसूस करते हैं जो आप जी चुके हैं?

आपको क्या लगता है भविष्य आपके लिए क्या मायने रखता है? क्या आपको वैसा महसूस होता है जैसा कभी राजा सुलैमान को महसूस हुआ था? .... सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है।

मैं ने अपने मन से कहा, चल, मैं तुझ को आनन्द के द्वारा जांचूंगा; इसलिये आनन्दित और मगन हो। परन्तु देखो, यह भी व्यर्थ है। (सभोपदेशक 2:1)

जब लोग जीवन में कभी न ख़त्म होने वाली समस्याओं से निराश हो जाते हैं, तो कई लोग धूम्रपान, नशीली दवाओं, शराब, बेवफाई और स्वच्छंद जीवनशैली की ओर रुख करते हैं। दूसरे लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे अमीर और संपन्न हैं। अपने जीवन के किसी मोड़ पर, राजा सुलैमान ने सामान्य स्वीकार्य सीमा से परे जीवन का आनंद लेने का निर्णय लिया। उस ने अपने शरीर को दाखमधु से तृप्त किया, और जो कुछ उसकी आँखों ने चाहा, उस से उस ने मुँह न मोड़ा।

उसने अपने दिल को किसी भी खुशी से नहीं रोका और उसकी 700 पत्नियाँ और 300 रखैलें थे। आप अपने जीवन का वर्णन कैसे करेंगे? क्या आप भी अपने जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, जो कुछ भी आपको पसंद है उससे अपने शरीर को संतुष्ट कर रहे हैं या आप परमेश्वर ने आपको जो दिया है उससे संतुष्ट हैं?

तब मैं ने मन में कहा, जैसी मूर्ख की दशा होगी, वैसी ही मेरी भी होगी; फिर मैं क्यों अधिक बुद्धिमान हुआ? और मैं ने मन में कहा, यह भी व्यर्थ ही है। (सभोपदेशक 2:15)

जब आप इस दुनिया का हिस्सा नहीं रहेंगे तो लोग आपको किस चीज़ के लिए याद करेंगे? राजा सुलैमान को इज़राइल के सबसे अमीर और बुद्धिमान राजाओं में से एक माना जाता है एक व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने दिव्य बुद्धि, ज्ञान, समझ और प्रचुर धन से आशीर्वाद दिया; उन्हें लापरवाह और बेफिक्र जीवन जीने और परमेश्वर के साथ अपनी अच्छी प्रतिष्ठा खोने के लिए भी जाना जाता है। परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता कैसा है? क्या आप जीवित परमेश्वर को पुकारते हैं?

बुद्धिमान क्योंकर मूर्ख के समान मरता है! इसलिये मैं ने अपने जीवन से घृणा की, क्योंकि जो काम संसार में किया जाता है मुझे बुरा मालूम हुआ; क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है। (सभोपदेशक 2:17)

क्या आप उस जीवन से नफरत करते हैं जो आप जी रहे हैं या आप उससे संतुष्ट हैं? अधिकांश लोगों को जीवन के बारे में राय है कि यह कहीं न कहीं इन दो चरम सीमाओं के बीच में है। जैसा कि हम अक्सर समाचारों में पढ़ते हैं, कुछ लोग जो जीवन से नफरत करते हैं वे अपनी जान लेने की चरम सीमा तक चले जाते हैं। अपनी जान लेना जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं है और ऐसा कभी नहीं किया जाना चाहिए। यह उस सृष्टिकर्ता के प्रति पाप भी है जिसने हमें जीवन दिया है। राजा सुलैमान, जिसके सपनों में सर्वशक्तिमान ईश्वर दो बार प्रकट हुए थे, उसने अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ईश्वर के साथ बहुत अच्छी संगति की थी, परन्तु फिर वह मूर्तिपूजा और लापरवाह जीवन में दिन बिताये जिससे परमेश्वर क्रोधित हो गया और परमेश्वर ने उसे उसके स्वच्छंदता के लिए दंडित किया। क्या आपको लगता है कि ईश्वर आपको आपके पापों की सज़ा दे रहा है? क्या आप उसके साथ शांति में हैं?

क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है; दोनों की वही दशा होती है, जैसे एक मरता वैसे ही दूसरा भी मरता है। सभों की स्वांस एक सी है, और मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं; सब कुछ व्यर्थ ही है। (सभोपदेशक 3:19)

पक्षी, जानवर, मछलियाँ, मनुष्य...जीवित प्राणी मरते हैं और हम सभी इसके बारे में जानते हैं। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि जब कोई इंसान धरती पर मरता है तो उसका क्या होता है? पृथ्वी पर जन्म लेने वाले हर एक व्यक्ति के पास मांसल शरीर, आत्मा और प्राण होती है। पहली मृत्यु में दैहिक शरीर मर जाता है परन्तु आत्मा और प्राण सर्वदा जीवित रहते हैं।

हम अपनी आत्मा और प्राण को नहीं देख सकते हैं । पृथ्वी पर हमारी शारीरिक मृत्यु के बाद आत्मा और प्राण कहाँ रहते हैं? वे या तो स्वर्ग में रहते हैं जो एक ऐसा स्थान है जिसे सर्वशक्तिमान ईश्वर, निर्माता ने उनके लिए तैयार किया है जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन जीते हैं या नर्क में रहते हैं जो ईश्वर के प्रति विद्रोह में रहने वालों के लिए शाश्वत सज़ा है। क्या आप इन तथ्यों से अवगत हैं?

उस समय चान्दी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा और सोते के पास घड़ा फूटेगा और कुण्ड के पास रहट टूट जाएगा जब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी। उपदेशक कहता है सब व्यर्थ ही व्यर्थ सब कुछ व्यर्थ है। (सभोपदेशक 12:6-8)

जन्म, शैशव, बचपन, किशोरावस्था, युवा व्यस्कता, मध्य व्यस्कता, बुढ़ापा, मृत्यु सभी व्यक्ति के जीवन का सामान्य क्रम है; (बेशक, कुछ लोगों की मृत्यु जीवन में गलत विकल्प चुनने के कारण समय से पहले हो जाती है)। ऋतुएँ तेज़ी से बदलती हैं और अंततः उस निर्माता के सामने खड़े होने का समय आ जाएगा जिसके हम हैं। हर कोई उसके प्रति जवाबदेह है और वह निर्णय लेता है कि हम अंततः अनंत काल में कहाँ रहेंगे, स्वर्ग या नर्क।

मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों 9:27)

सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा॥ (सभोपदेशक 12:13,14)

पृथ्वी पर जीवन चुनौतीपूर्ण, उलझन भरा और दर्दनाक हो सकता है, जिससे हमें यह महसूस होता है कि सब कुछ व्यर्थ है जैसा कि राजा सुलैमान ने अपने जीवन के एक चरण के दौरान पाया था, लेकिन अंततः उसे एहसास हुआ कि सब कुछ व्यर्थ या अर्थहीन है जब जीवन में सर्वशक्तिमान ईश्वर शामिल नहीं होता है। जब हम ईश्वर का भय मानते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो वह पृथ्वी पर हमारे जीवन के हर चरण में लगातार हमारे साथ रहता है।

परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है, कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं।
(भजन संहिता 14:2)

यीशु कहते हैं,

हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। (मत्ती 11:28)

संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीन लिया है॥ (यूहन्ना 16:33)

मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। (यूहन्ना 14:27)

स्वर्ग में अनन्त जीवन अर्जित नहीं किया जा सकता। यीशु मसीह, परमेश्वर के धर्मी पुत्र ने आपके पापों और अधर्म के लिए क्रूस पर मरकर कीमत चुकाई । उनके मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास करने वालों को और परमेश्वर के वचन, बाइबल का पालन करने वालों को परमेश्वर स्वर्ग में अनन्त जीवन देता है ।

मृत्यु आएगी जब पृथ्वी पर आपका परमेश्वर निश्चित समय समाप्त हो जाएगा। आप यीशु मसीह के वचनो पर विश्वास करके स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनंत काल तक रहने के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं। वह कहता है,

पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। (यूहन्ना 11:25)

Dr. Johnson Cherian M.D. Ph.D.
Copyrights © 2024
All rights reserved.

TGSM, Eraviperoor, Kerala, India
WhatsApp +91 9605504120

चाहे पापी सौ बार पाप करे अपने दिन भी बढ़ाए,
तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते हैं
और अपने तईं उसको सम्मुख जानकर भय से
चलते हैं, उनका भला ही होगा..

(सभोपदेशक 8:12)

युवाओं को प्रभावित करने वाले सामाजिक मुद्दों के
बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रकाशित

व्यर्थ ही व्यर्थ,
सब कुछ व्यर्थ है।

Dr. Johnson Cherian M.D. Ph.D.
TGSM, Eraviperoor, Kerala, India
WhatsApp +91 9605504120
johnson3570@gmail.com
www.johnsoncherian.com

All is Vain_Hindi.indd 10 31/08/2024 4:10:05 PM